विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

रूपम कुमारी, वर्ग -दशम् , विषय- हिंदी

दिनांक -6 सितंबर 2020

NCERT syllabus

।। अध्ययन सामग्री ।।

सुप्रभात बच्चों,

पिछली कक्षाओं से लगातार जॉर्ज 'पंचम की नाक' पाठ को पढ़ते आ रहे हैं । कल की कक्षा में आपने पढ़ा कि मूर्तिकार को यह आदेश दिया जाता है कि ,देश के किसी भी कोने से मूर्ति की नाक के लिए उत्तम पत्थर को खोज कर लाया जाए । लेकिन देश भर की ख़ाक

जाने के बावजूद भी मूर्तिकार को वह पत्थर मिलता । अंततः वह हार कर लौट जाता है और सारे अधिकारियों को बताता है कि उसे पत्थर नहीं मिला अधिकारियों में बौखलाहट होने लगती है ।

स्थिति की गंभीरता को समझते हुए मूर्तिकार ने आईडिया दिया कि महापुरुषों की मूर्तियों पर से नाक को काटकर जॉर्ज पंचम की नाक पर फिट कर दिया जाए ।

विशेष अर्थ- अपने देश के महापुरुषों को उनके सुकृत्य, त्याग , देश भक्ति एवं महानता को बिल्कुल महत्व न देते हुए अंग्रेज और अंग्रेजों की प्रतिष्ठा का इतना ख्याल रखा गया कि

जॉर्ज पंचम की नाक के लिए अपने देश के महापुरुषों की नाक काटी गई ।

नाक जो कि हमारी प्रतिष्ठा का प्रतीक होती है ।

अब आगे.....

निर्देश- दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें और समझने का प्रयास करें ।

जी, सरदार पटेल, विट्ठलभाई पटेल, महादेव देसाई की मूर्तियों को परखा और बंगाल की ओर चला–गुरुदेव रवींद्रनाथ, सुभाषचंद्र बोस, राजा राममोहन राय आदि को भी देखा, नाप-जोख की और बिहार की तरफ़ चला। बिहार होता हुआ उत्तर प्रदेश की ओर आया–चंद्रशेखर आज़ाद, बिस्मिल, मोतीलाल नेहरू, मदनमोहन मालवीय की लाटों के पास गया। घबराहट में मद्रास भी पहुँचा, सत्यमूर्ति को भी देखा और मैसूर-केरल आदि सभी प्रदेशों का दौरा करता हुआ पंजाब पहुँचा–लाला लाजपतराय और भगतसिंह की लाटों से भी सामना हुआ। आखिर दिल्ली पहुँचा और उसने अपनी मुश्किल बयान की, "पूरे हिंदुस्तान की परिक्रमा कर आया, सब मूर्तियाँ देख आया। सबकी नाकों का नाप लिया पर जॉर्ज पंचम की इस नाक से सब बड़ी निकलीं।

सुनकर सब हताश हो गए और झुँझलाने लगे। मूर्तिकार ने ढाढस बँधाते हुए आगे कहा, "सुना है कि बिहार सेक्रेटरिएट के सामने सन् बयालीस में शहीद होने वाले बच्चों की मूर्तियाँ स्थापित हैं, शायद बच्चों की नाक ही फिट बैठ जाए, यह सोचकर वहाँ भी पहुँचा पर उन बच्चों की नाकें भी इससे कहीं बड़ी बैठती हैं। अब बताइए, मैं क्या करूँ?"

...राजधानी में सब तैयारियाँ थीं। जॉर्ज पंचम की लाट को मल-मलकर नहलाया गया था। रोगन लगाया गया था। सब कुछ हो चुका था, सिर्फ़ नाक नहीं थी।

बात फिर बड़े हुक्कामों तक पहुँची। बड़ी खलबली मची–अगर जॉर्ज पंचम के नाक न लग पाई तो फिर रानी का स्वागत करने का मतलब? यह तो अपनी नाक कटाने वाली बात हुई।

लेकिन मूर्तिकार पैसे से लाचार था...यानी हार मानने वाला कलाकार नहीं था। एक हैरतअंगेज़ खयाल उसके दिमाग में कौंधा और उसने पहली शर्त दोहराई। जिस कमरे में कमेटी बैठी हुई थी उसके दरवाज़े फिर बंद हुए और मूर्तिकार ने अपनी नयी योजना पेश की, "चूँकि नाक लगना एकदम ज़रूरी है, इसलिए मेरी राय है कि चालीस करोड़ में से कोई एक ज़िंदा नाक काटकर लगा दी जाए..."

बात के साथ ही सन्नाटा छा गया। कुछ मिनटों की खामोशी के बाद सभापति ने सबकी तरफ़ देखा। सबको परेशान देखकर मूर्तिकार कुछ अचकचाया[6] और धीरे से बोला, "आप लोग क्यों घबराते हैं! यह काम मेरे ऊपर छोड़ दीजिए...नाक चुनना मेरा काम है, आपकी सिर्फ़ इजाज़त चाहिए।"

कानाफूसी हुई और मूर्तिकार को इजाज़त दे दी गई।

6. चौंक उठना, भौंचक्का होना